Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा की अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.राजेश कुमार यादव

एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर ,बीएड विभाग, राम अवथ यादव गन्ना कृषक पी.जी.कालेज, ताखा, शाहगंज, जौनपुर उ.प्र.

Article Info
Volume 7, Issue 6
Page Number : 114-124

Publication Issue :
November-December-2024

Article History
Accepted : 10 Dec 2024
Published : 20 Dec 2024

सारांश: शोधकर्ता का शोध विषय, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा की अभिवृत्ति तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन है। शिक्षा की सकारात्मक अभिवृत्ति को विकसित किया जाना उनके व्यक्तित्व के लिए तो आवश्यक है ही, साथ ही भावी जीवन के निर्माण के लिये भी आवश्यक है। शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का विकास न कर सकने के कारण ही वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल होते है। जो छात्र अपने अध्ययन में सफलता प्राप्त करते हैं, वे साधारणत: अकेले अध्ययन करते हैं या अध्ययन की किसी निश्चित विधि का अनुसरण करते है। ये छात्र सफल होने के कारण अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हैं। यदि इस उद्देश्य का सम्बन्ध उनकी किसी विशिष्ट इच्छा से होता है, तो वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति को शिक्षा में लगा देते हैं। अभिवृत्ति व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है। अगर किसी की किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हैं तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा, उसे पाने के लिए प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक अभिवृत्ति हुई तो वह उससे दूर भागेगा और यहाँ तक कि यह उसके नाम से ही चिढ़ने या उत्तेजित होने लगेगा। उदाहरण के लिए जिस व्यक्ति की जनतंत्र के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति होती है वह जनतंत्रात्मक परम्पराओं और संस्थाओं के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण रखेगा और तानाशाही प्रक्रियाओं के प्रति प्रतिकूल रवैया अपनायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि अभिवृत्तियों के द्वारा व्यवहार को एक निश्चित दिशा दिया जाता है।

मुख्य शब्द: माध्यमिक स्तर, शिक्षा, अभिवृति, शैक्षणिक उपलब्धि, तुलनात्मक अध्ययन आदि।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना: जन्म लेने के बाद से प्राणी अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता हैं। इस अनुभव ग्रहण करने में ही उसकी शिक्षा निहित होती हैं। जॉन लॉक ने मानवीय जीवन में शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि "पौधों का विकास कृषि से होता हैं और मनुष्य का शिक्षा द्वारा।" शिक्षा द्वारा ही मनुष्य का जीवन परिष्कृत तथा विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है तथा समाज को योगदान देने में सक्षम होता हैं। व्यक्ति का चरित्र, व्यक्तित्व, कुशलतायें तथा आदतें शिक्षा का ही परिणाम हैं। मानव जाति की समस्त सम्भावनायें बाल समुदाय में विकसित होती हैं। जिस प्रकार मिट्टी को गीली और कच्ची अवस्था में विभिन्न रूपों में ढाला जा सकता हैं, उसे मनचाहा आकार देकर विशिष्ट आकार का पात्र बनाया जा सकता है। उसी प्रकार बाल्यावस्था में जिन संस्कारों और आदतों के बीज बोये जाते हैं वे सम्पूर्ण जीवन काल तक स्थाई रहते हैं, उनमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता हैं. मानव शिशु जन्म के समय केवल जैविक गुणों वाला एक जीवित प्राणी होता है। धीरे–धीरे वह समाज की विशेष संस्कृतियों में पलता हुआ सामाजिक प्राणी बन जाता है। बालक की अनौपचारिक शिक्षा सामान्यत: परिवार से ही प्रारम्भ होती हैं। प्रारम्भ से ही बालक में शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता जागृत होने लगती है। यह बचपन से ही भिन्न वस्तुओं, संवादों तथा क्रिया कलापों को समझने की चेष्टा करता है। अत: बाल्यकाल से ही बालक में भिन्न मनोवृत्तियों का समावेश होने लगता है वह अपने आसपास की मिन्न वस्तुओं, खाद्य पदार्थों के प्रति अपनी अभिवृत्ति व्यक्त करता है। जैसे–जैसे बालक का विकास होने लगता है। बालक में सकारात्मक व नकारात्मक दोनो रूपों में वस्तु पदार्थ तथा आसपास के वातावरण के प्रति अनुकूल तथा प्रतिकूल अभिवृत्तियों का भी विकास होने लगता है। एक ओर बालक नकारात्मक प्रभावों में प्रतिकूल अभिवृत्ति बना लेता है और उसे नापसन्द करता है, उसके प्रति घृणा के भाव व्यक्त करता है तथा उससे दूर भागने की चेष्टा करता है, वहीं दूसरी ओर बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक सही शिक्षा व परिवार के मार्गदर्शन से सकारात्मक मनोवृत्तियों को ग्रहण करता है जिसका प्रभाव उसके द्वारा अर्जित शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ता है। वर्तमान में स्नातक स्तर की शिक्षा की दशा माध्यमिक स्तर की शिक्षा की अपेक्षा अधिक असंतोषजनक है। अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में पूरे शिक्षक नहीं है। यदि है तो उन्हें संविदा पर रखा गया है। इस कमी को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा वर्ष 2022 में कला, वाणिज्य तथा विज्ञान विषयों में लगभग 1000 से अधिक पदों को भरे जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गयी है। एक ओर जहाँ माध्यमिक शिक्षा को रीढ़ की हड्डी कहा जाता है वहीं पर स्नातक स्तर की शिक्षा को प्रतिभा को निखारने, इच्छा व विचारों के विकास का स्तर कहा जाता है। इस स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र अपनी किशोरावस्था की चरम सीमा में होते हैं। अगर इस स्तर पर उन्हें सही मार्गदर्शन दिया जाए तो वे बड़ी से बड़ी सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। इस अवस्था में छात्र एवं छात्राओं के मनोवृत्तियों में सही शिक्षा द्वारा सही समझ को विकसित करके सही दिशा की ओर अग्रसर किया जा सकता है। विद्यालय में छात्र शिक्षा प्राप्त करता है। व्यक्ति जब दूसरों के अनुभवों को शब्दों, निरीक्षण, चिन्तन, मनन द्वारा ग्रहण करता है तथा उनका लाभ शिक्षा द्वारा उठाता है तो यह प्रक्रिया शिक्षा में अभिवृत्ति को प्रकट करती है। अत: ज्ञान को ग्रहण करने की प्रक्रिया का नाम शिक्षा की अभिवृत्ति हैं। शिक्षा का सर्वमान्य अर्थ हैं उन तथ्यों, विचारों, विषयों, विधियों, समस्याओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना, जिससे छात्र या व्यक्ति अनभिज्ञ हैं। शिक्षा वास्तव में नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के लिए छात्र द्वारा किया

जाने वाला नियोजित प्रयास है। यदि उसका प्रयास एक निश्चित योजना या विधि के अनुसार नहीं हैं तो वह नवीन ज्ञान को प्राप्त करने में कदापि सफल नहीं हो सकता है। मुख्यत: सभी वर्ग के छात्रों में शिक्षा की अभिवृत्ति अधिक होती है जिन्हें सही शिक्षा व ज्ञान द्वारा सकारात्मक रूप दिया जा सकता है।

आज के युग में हमें विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनके चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो तथा वे अपने पैरों पर खड़ा होने सीखें। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में "शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता को अभिव्यक्त करना है जो सब मनुष्यों में पहले से ही विद्यमान है।" विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के अनुसार छात्रों में किसी व्यक्ति, संस्था, वस्तु या प्रक्रिया के प्रति अनुकूल एवं प्रतिकूल रूप से विचारों को व्यक्त करने की क्षमता होती है, जो उन व्यक्तित्व प्रवृत्तियों की ओर संकेत करती है, जिनके द्वारा किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति व्यवहार का निर्णय सरलता से लिया जा सकता है। उन तथ्यों को हम छात्रों की अभिवृत्ति के रूप में अध्ययन तथा मापन करते हैं।

फ्रीमैन के अनुसार "अभिवृत्ति किन्हीं निश्चित परिस्थितियों, व्यक्तियों एवं वस्तुओं के प्रति संगत रूप से प्रत्युत्तर देने वाली वह स्वाभाविक तत्परता है जिसे सीखा जा सकता है तथा वह किसी व्यक्ति विशेष के प्रत्युत्तर देने की लाक्षणिक रीति बन जाती है। स्नातक वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा में अभिवृत्तियों भिन्न प्रकार की होती है। कुछ विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्रायें गणित विषय को अत्यधिक रुचि के साथ पढ़ते हैं। जबकि कुछ गणित को कठिन विषय मानते हैं। इसी प्रकार कला वर्ग के छात्र–छात्राओं में विषय के प्रति भिन्न मनोवृत्तियां होती हैं किसी को इतिहास तो किसी को साहित्य में अत्यधिक रुचि होती है। इन भिन्न शिक्षा की अभिवृत्तियों के कारण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिकों का मत हैं कि छात्र एवं छात्रायें में शिक्षा की अभिवृत्ति का तथा इनमें शिक्षा में सफलता का तभी निर्माण कर सकते हैं, जब उनको अध्ययन के उत्तम नियमों का ज्ञान हो। इन मनोवैज्ञानिकों में एनबी कफ का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने माध्यमिक तथा उच्च्चस्तरीय विद्यालयों के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अन्वेषण किया। इसके परिणामस्वरूप, वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उत्तम छात्रों में शिक्षा की अभिवृत्ति उत्तम आदतें होती हैं। क्योंकि वे शिक्षा में अध्ययन के उत्तम नियमों का अनुसरण करते हैं। कफ का कथन है कि जिन नियमों का अनुसरण करने के कारण उत्तम छात्रों में शिक्षा के प्रति उत्तम अभिवृत्तियों पायी जाती है। उनमें से निम्नांकित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं–

1. प्रत्येक पाठ का स्वयं अध्ययन करना।
2. प्रत्येक पाठ का गम्भीर अध्ययन करने से पूर्व उसकों सरसरी तरीके से पढ़ना।
3. प्रत्येक पाठ के अध्ययन के तुरन्त बाद उसको मौन रूप से दोहराना।
4. प्रत्येक पाठ की विषय सामग्री को भली–भाँति समझाने के लिए उदाहरणों की खोज करना।
5. निश्चित पाठों के अध्ययन के लिए समय की निश्चित अवधि निर्धारित करना।
6. शिक्षक द्वारा विभिन्न पाठों के सम्बन्ध में बताई जाने वाली बातों को संक्षेप में लिखना।

7. अध्ययन के लिए उपयुक्त वातावरण खोज करना।

8. बाह्य एवं आन्तरिक बाधाओं के प्रति ध्यान न देना।

9. किसी विषय का अध्ययन करने से पूर्व उसका स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना।

10. अगले दत्त कार्य को आरम्भ करने से पूर्व पिछले दत्त कार्य का पुन: अवलोकन करना।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सामाजिक आकांक्षाओं के अनुरूप बालक को परिमार्जित करणीयवहार के विभिन्न अवयवों में अभिवृत्तियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। किसी वस्तु व्यक्ति अथवा विचार के प्रति व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करेगा। यह बहुत कुछ उस व्यक्ति की उनके प्रति बनी अभिवृत्तियों पर निर्भर करता है। व्यवहार ही नहीं व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व भी उसकी अभिवृत्तियों के अनुकूल ही बनता है। जो कुछ भी व्यक्ति सीखता है और आदतों एवं रूचि आदि को ग्रहण करता है वे सभी उसकी अभिवृत्तियों द्वारा प्रभावित होता है।

समस्या का चयन : अभिवृत्ति का महत्व शिक्षकों के लिए ही नहीं बल्कि इसका महत्व छात्र और माता–पिता के लिए भी है। यदि इन्हें इस बात का स्पष्ट ज्ञान हों कि किन प्रकारों की शिक्षा से सम्बन्धित अभिवृत्तियों का विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पडता है तो इस अध्ययन के द्वारा शिक्षकों को छात्रों को समझने में सहायता मिलेगी। किसी भी समस्या को निपटाने के लिए हमें उसकी तह तक जाना होता हैं। यह तभी सम्भव है जब हम सम्बन्धित चरों का उपयोगी अध्ययन एवं शोध बडी गम्भीरता पूर्वक करें। आधुनिक समय में शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि वर्तमान समय में कला तथा विज्ञान के विभिन्न विषयों में माध्यमिक विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने का प्रचलन अधिक प्रभावी है। इस दृष्टि से शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि यह ज्ञात करें कि क्या छात्रों की शिक्षा में अभिवृत्ति का उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पडता है। इस जिज्ञासा से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध विषय "**माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन,** करने का निर्णय लिया। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा जौनपुर जिले में संचालित होने वाले माध्यमिक विद्यालयों में से 200 छात्र–छात्राओं का चयन लाटरी विधि से किया गया है।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें:

H1.माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र–छात्राओं के शिक्षा की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

H2.माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं।

H3.माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

H4.माध्यमिक स्तर विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पडता है।

प्रस्तुत शोध की शून्य परिकल्पनायें:

Ho1. माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho2. माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

Ho3. माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho4. माध्यमिक स्तर विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि एवं शोध उपकरण : अनुसंधान के लिए समस्या के चयन एवं परिकल्पना के निर्माण के पश्चात् अनुसंधानकर्ता अपनी परिकल्पना के परीक्षण के लिए उपकरणों का चुनाव करता हैं। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए प्रदत्त संकलन करने हेतु कतिपय यन्त्रों या उपकरणों की आवश्यकता होती है। जिसके द्वारा परिकल्पना का परीक्षण सम्भव होता है। सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों के चयन का अत्यधिक महत्व हैं। अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात होना चाहिए कि इन उपकरणों से किस प्रकार के आंकड़े प्राप्त होंगे तथा उनसे प्राप्त आंकडों का विश्लेषण किस प्रकार किया जायेगा। शैक्षिक अनुसंधान में प्रयुक्त प्रमुख उपकरणों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है–

1. अन्वेषण प्रपत्र
2. साक्षात्कार
3. पर्यवेक्षण
4. समाजमिति
5. मनोवैज्ञानिक परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण : प्रस्तुत अध्ययन में जिन उपकरणों का प्रयोग किया गया है, वे प्रश्नावली से सम्बन्धित हैं। जिनके माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर विद्यालय के विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु सम्बन्धित प्रश्नावली का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है। जिसका निर्माण डा॰ एस॰एल॰ चोपड़ा, लखनऊ द्वारा किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ:

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के लिए संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा जेड परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

1. प्रयुक्त अध्ययन में आंकड़ों के मध्यमान की गणना हेतु सूत्र-

$M = \Sigma x / N$

जहाँ, Σx = आंकड़ों का योग

N = कुल आंकड़ों की संख्या

M = आंकड़ों का मध्यमान

2. मानक विचलन की गणना हेतु प्रयुक्त सूत्र-

$Sd \sqrt{\Sigma (X-M)^2/N}$

जहाँ, X = प्राप्तांक

M = मध्यमान

$\Sigma(X-M)^2$ = प्राप्तांक का मध्यमान के लिए विचलनों के वर्गों का योग

N = प्राप्तांको की कुल सख्या

3. मानक त्रुटि-

$\sigma D = \sqrt{S^2/N^1 - S^2/N^2}$

जहाँ, σD = मानक त्रुटि

S_1 = प्रथम समूह का मानक विचलन

S2 = द्वितीय समूह का मानक विचलन

N_1 = प्रथम न्यादर्श की संख्या

N2 = द्वितीय न्यादर्श की संख्या

परिकल्पना परीक्षण:

H1. माध्यमिक स्तर विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

H,01. माध्यमिक स्तर विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1: माध्यमिक स्तर विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	अनुपात मान	निष्कर्ष

1	विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का समूह	100	77.75	13.30	198	0.52	0.1 स्तर पर सार्थक
	कला वर्ग के छात्र–छात्राओं का समूह	100	78.65	13.50			

निष्कर्ष: तालिका संख्या–4.1 एवं रेखाचित्र संख्या–4.1 से स्पष्ट है कि वित्तपोषित माध्यमिक स्तर विद्यालय के विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्राओं छत्र 100 की शिक्षा की अभिवृत्ति परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान 77.75 तथा मानक विचलन 13.30 तथा कला संकाय के छात्र एवं छात्राओं 100 की शिक्षा की अभिवृत्ति परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान 78.65 तथा मानक विचलन 13.50 प्राप्त हुआ। छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 0.52 प्राप्त हुआ। जो कि अनुपात मान की सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 2.58 से कम पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय में कला एवं विज्ञान के छात्र एवं छात्राओं में शिक्षा की अभिवृत्ति में है स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है।

अत: परिकल्पना संख्या–1 माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना,01 माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है अस्वीकृत की जाती है।

H2. माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

H02.माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2: माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	अनुपात मान	निष्कर्ष
1	विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का समूह	100	66.50	6.95	198	3.89	0.1 स्तर पर सार्थक

	कला वर्ग के छात्र–छात्राओं का समूह	100	59.70	7.56			

निष्कर्ष: तालिका संख्या–4.2 एवं रेखाचित्र संख्या–4.2 से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं 100 का शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण करने पर प्राप्तोंकों का मध्यमान 66.50 तथा मानक विचलन 6.95 तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं छत्र 100 का शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण करने पर प्राप्तौंकों का मध्यमान 59.70 तथा मानक विचलन 7.56 प्राप्त हुआ। छात्रों का शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 3.89 प्राप्त हुआ। जो कि अनुपात मान की सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 2.58 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक अन्तर है। अत: परिकल्पना संख्या–H2. माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है तथा शून्य परिकल्पना 02, माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं अस्वीकृत की जाती है।

H03.माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

H03.माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारिणी संख्या 3: माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

क्रमांक	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	अनुपात मान	निष्कर्ष
1	उच्च शिक्षा की अभिवृति का समूह	50	89.02	6.89	98	15.7	0.1 स्तर पर सार्थक

	निम्न शिक्षा की अभिवृति का समूह	50	66.64	7.42			

निष्कर्ष : तालिका संख्या–4.3 एवं रेखाचित्र संख्या–4.3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं 50 की उच्च शिक्षा की अभिवृत्ति का परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान 89.02 तथा मानक विचलन 6.85 तथा निम्न शिक्षा की अभिवृत्ति का परीक्षण करने पर प्राप्तोंकों का मध्यमान 66.64 तथा मानक विचलन 7.42 प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा की अभिवृत्ति तथा निम्न शिक्षा की अभिवृत्ति परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 15.7 प्राप्त हुआ। जो कि मान की सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अत: परिकल्पना संख्या –03 माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है– निरस्त की जाती है तथा शून्य परिकल्पना–03 माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है–स्वीकृत की जाती है।

H4.माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

Ho4. माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सारणी संख्या 4: माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

क्रमांक	ग्रुप	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	अनुपात मान	निष्कर्ष
1	उच्च शिक्षा की अभिवृति का समूह	50	82.43	5.71	98	12.5	0.1 स्तर पर सार्थक

2	निम्न शिक्षा की अभिवृति का समूह	50	67.34	6.32			

निष्कर्ष : तालिका संख्या-4.4 एवं रेखाचित्र संख्या-4.4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं 50 की उच्च शिक्षा की अभिवृत्ति का परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान 82.43 तथा मानक विचलन 5.71 तथा निम्न शिक्षा की अभिवृत्ति का परीक्षण करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान 67.34 तथा मानक विचलन 6.32 प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा की अभिवृत्ति तथा निम्न शिक्षा की अभिवृत्ति परीक्षण का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए क्रांन्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 12.5 प्राप्त हुआ। जो कि अनुपात मान की सार्थकता सारणी देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालयों के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर 0.01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अत: परिकल्पना संख्या-4 माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। निरस्त की जाती है तथा शून्य परिकल्पना 04, माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता हैं- स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव: निष्कर्ष ज्ञात किये हैं। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियों एवं अग्रिम शोध हेतु सुझाव भी अध्याय में प्रस्तुत किये गये हैं-

1. माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
3. माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
4. माध्यमिक विद्यालय के कला वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा की अभिवृत्ति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

भावी अध्ययन के लिए सुझाव : एक अच्छे शोध कार्य की मूलभूत विशेषता ये होती है कि ये भावी अध्ययन के लिए नींव प्रदान करते हैं। भावी अध्ययन के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार है-

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित हैं। परन्तु यह न केवल स्नातक विद्यालयों के लिए बल्कि माध्यमिक विद्यालयों, वित्त एवं स्ववित्त पोषित विद्यालयों के लिए भी उपयोगी है। अत: भावी शोधकर्ता अपने शोध कार्य को प्राथमिक स्तर एवं स्नातक स्तर पर भी कर सकते हैं।

2. माध्यमिक विद्यालयों के अलावा अन्य स्नातक विद्यालय जैसे बी॰एड॰, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट वित्त एवं स्ववित्त पोषित विद्यालय आदि को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।

3. अध्ययन की आदतों एवं अभिवृत्ति के अलावा अन्य चरों विषय वर्ग, लिंग, जाति तथा वातावरण एवं समुदाय को लेकर अध्ययन किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत अध्ययन को अन्य शहर और बडे न्यादर्श एवं विस्तृत क्षेत्र को लेकर भी किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत शोध कार्य सामान्य विद्यार्थियों पर किया गया है। इस शोध कार्य को विकलांग, पिछड़े एवं मन्द बुद्धि बालकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन (2000) : "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन", आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।

2. भार्गव, महेश (2002) : "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन", आगरा भार्गव पुस्तक प्रकाशन।

3. भटनागर, आर0पी0 (1995) : "शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण", मेरठ ईगल बुक इन्टरनेशनल।

4. गुप्ता, एस0पी0 (2004) : "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन ।

5. जायसवाल, सीताराम (2002) "शिक्षा मनोविज्ञान", लखनऊ : प्रकाशन केन्द्र, रेलवे क्रॉसिंग सीतापुर रोड।

6. मु॰ सुलेमान (1996) : "आधुनिक समाज मनोविज्ञान", पटना: शुक्ला बुक डिपो।

7. मंगल, एस0के0 (2009) : शिक्षा मनोविज्ञान" नई दिल्ली: पी॰एच॰ आई॰ लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

8.शर्मा, आ0ए0 (1995) : "शिक्षा अनुसंधान, मेरठ सूर्या पब्लिकेशन निकट गर्वनमेन्ट कॉलेज।

9.पाल, एस0के0 (2007-08): "शिक्षा के सिद्धान्त और आधार", इलाहाबाद: न्यू कैलाश प्रकाशन।

10. पाठक, पी0डी0 (2007): "शिक्षा मनोविज्ञान" आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।

11. राय, पारसनाथ (2006): "अनुसंधान परिचय", आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ।

12. सारस्वत, मालती (2000): "शैक्षणिक मनोविज्ञान की रूपरेखा", आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।